वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 422
ISBN-978-93-84003-10-4

अकृत्रिम वृक्ष जिनालय विधान

(तिलोयपण्णत्ति आदि ग्रंथ के आधार से अकृत्रिम वृक्षों का वर्णन)

–रचयित्री–

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

श्रवण कृष्णा एकम् (13 जुलाई 2014) परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित 'श्री गौतम गणधर वर्ष' (2014–2015) के अन्तर्गत ज्ञानामृत महोत्सव–शरदपूर्णिमा के शुभ अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर निर्वाण संवत् 2540	मूल्य
1100 प्रतियाँ	श्रावण कृष्णा एकम्	16/-रु.
	(13 जुलाई 2014)	

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

अर्हन्तो मंगलं कुर्युः सिद्धाः कुर्युश्च मंगलम्।
आचार्याः पाठकाश्चापि साधवो मम मंगलम्।।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परम पूज्य 105 गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने बीसवीं–इक्कीसवीं शताब्दी में साहित्य सृजन की अविरल धारा को प्रवाहित करके जैनधर्म की अद्भुत प्रभावना की है तथा जैन साहित्य जगत पर भी अनंत उपकार किए हैं। विशेष रूप से आपकी लेखनी से प्रसूत पद्य साहित्य अर्थात् पूजा विधान से जन–जन को अमोघ शस्त्र के रूप में भक्ति का मार्ग प्राप्त हुआ है।

विधानों की श्रृंखला में यह 'अकृत्रिम वृक्ष जिनालय' विधान आपके हाथों में आ रहा है। इस विधान में ढाईद्वीप के अकृत्रिम वृक्षों पर विराजमान जिनमंदिर एवं जिनबिम्बों की पूजा है। आज हमें अकृत्रिम जिनमंदिरों के दर्शन नहीं हो रहे हैं क्योंकि हमारे पास वहाँ तक जाने की शक्ति का अभाव है। पूज्य माताजी हस्तिनापुर में अकृत्रिम जिनमंदिर की रचना बनवा रही हैं। मैं माताजी से कहता हूँ कि माताजी जब हमने एक भी अकृत्रिम जिनमंदिर देखा नहीं, कहाँ है, कैसा है? तब हम उसे कैसे बनाएं ? लेकिन माताजी का कहना है कि जो हमारे प्राचीन शास्त्र जैसे तिलोयपण्णत्ति, त्रिलोकसार, सिद्धान्तसारदीपक, लोकविभाग, तत्त्वार्थवार्तिक आदि ग्रंथ हैं जो कि हजार–दो हजार वर्ष प्राचीन हैं, जिनमें अकृत्रिम जिनमंदिर का वर्णन है, जिनमें भगवान महावीर की दिव्यध्वनि के अंश मौजूद हैं वे सब प्रमाणीक हैं अतः हमें इनके वचनों पर श्रद्धान करते हुए इन सभी को मानना है। आज हम इन पर श्रद्धान करेंगे तो अगले भवों में हमें यह सब कुछ देखने को प्राप्त होगा।

यह विधान भगवान की भक्ति के साथ–साथ करणानुयोग के स्वाध्याय का लाभ प्रदान करने वाला है। इस विधान को करके सभी भक्तजन यह भावना भाए कि हमें भी शीघ्र ही इन अकृत्रिम रचनाओं के दर्शन हों। यह विधान सभी के जीवन में मंगल को प्रदान करे एवं विधान की रचयित्री पूज्य माताजी दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें, वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि करे, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल प्रार्थना है।

प्रस्तावना

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

मध्यलोक में असंख्यातों द्वीप समुद्र हैं। प्रथम द्वीप का नाम जम्बूद्वीप है। उसके बाद लवण समुद्र है। फिर दूसरा द्वीप धातकीखण्डद्वीप है, उसके बाद कालोदधि समुद्र है। फिर पुष्करार्धद्वीप है जहाँ बीचों–बीच में गोलाकार मानुषोत्तर पर्वत होने से यह ढाईद्वीप की सीमा बन जाती है वहीं तक मनुष्य जा सकते हैं।

इस **'अकृत्रिम वृक्ष जिनालय विधान'** में परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने ढाईद्वीप के अन्दर पंचमेरु सम्बन्धी दस अकृत्रिम वृक्ष हैं, जिन पर जिनमंदिर एवं जिनप्रतिमाएँ विराजमान हैं, उनकी पूजा दी है। इन दस अकृत्रिम वृक्षों के जितने परिवार वृक्ष हैं उन सब पर भी जिनमंदिर एवं जिनप्रतिमाएँ हैं उन सभी प्रतिमाओं को भी इस विधान में अर्घ्य चढ़ाया है।

जैसा कि इस विधान के शुभारम्भ में मंगलाचरण में पूज्य माताजी ने लिखा है–

जंबू–शाल्मलि आदि दश तरू, शाखाओं पर दश मंदिर।
उन परिवार तरू पर भी जिनगृह प्रतिमा वंदूं शिवकर।।

पूजा नं. 1 **जंबूवृक्षादि दशवृक्ष जिनालय पूजा** (समुच्चय पूजा) में ढाईद्वीप सम्बन्धी उत्तरकुरु, देवकुरु में स्थित जंबूवृक्षादि दशवृक्ष जिनालय, जिनबिंब एवं उनके परिवार वृक्ष के जिनालय एवं जिनबिम्बों की पूजा है। इन जिन प्रतिमाओं की महिमा का वर्णन करते हुए पूज्य माताजी ने जयमाला में लिखा है–

जिन भवनों में जिनप्रतिमाएँ, हैं शाश्वत सिद्ध कही जाती।
बहु रत्नों की सुन्दर आकृति, छवि वीतराग मन को भाती।।
रत्नों के सिंहासन ऊपर, प्रतिमा पद्मासन से राजें।
भामंडल की कांती ऐसी, जिससे कोटी सूरज लाजें।।

पूजा नं. 2 **सुदर्शन मेरु संबंधी जंबूवृक्ष शाल्मलि वृक्ष जिनालय पूजा** में सुदर्शन मेरु के ईशान, नैऋत्य कोण में जम्बूवृक्ष और शाल्मलि वृक्ष सम्बन्धी जिनालय एवं जिनबिम्बों की पूजा है। जम्बूवृक्ष के परिवार वृक्ष 1 लाख 40 हजार 119 हैं एवं शाल्मलि वृक्ष के परिवार वृक्ष भी 1 लाख 40 हजार 119 हैं इन सभी परिवार वृक्षों के ऊपर विराजमान जिनमंदिरों एवं जिनप्रतिमाओं को भी इस पूजा में अर्घ्य चढ़ाया है।

पूर्णार्घ्य में पूज्य माताजी ने लिखा है–

दोय लाख अस्सी सहस, दो सौ अड़तिस रम्य।
जजूं सर्व परिवार तरू, के जिनगृह जिनबिंब।।

पूजा नं. 3 **'विजयमेरु संबंधी धातकी-शाल्मलि वृक्ष जिनालय पूजा'** में विजयमेरु सम्बन्धी धातकी, शाल्मली वृक्ष के जिनालय एवं जिनबिम्बों की पूजा है। धातकीवृक्ष के 2 लाख, 80 हजार, 239 परिवार वृक्ष हैं एवं शाल्मलि वृक्ष के भी 2 लाख, 80 हजार, 239 परिवार वृक्ष है। इन सभी परिवार वृक्ष अर्थात् 5 लाख, 60 हजार, 478 परिवार वृक्षों पर विराजमान जिनमंदिर एवं जिनप्रतिमाओं को इस पूजा में अर्घ्य चढ़ाया है।

पूजा नं. 4 **अचलमेरु संबंधी धातकीवृक्ष शाल्मलिवृक्ष जिनालय पूजा** में अचलमेरु सम्बन्धी धातकीवृक्ष एवं शाल्मली वृक्ष पर विराजमान जिनालय एवं जिनबिम्बों की पूजा है। इस पूजा में भी 5 लाख, 60 हजार, 478 परिवार वृक्षों पर विराजमान जिनमंदिरों एवं जिनबिम्बों को अर्घ्य चढ़ाया है।

पूजा नं. 5 **मन्दरमेरु संबंधी पुष्करतरु शाल्मलितरु जिनालय पूजा** में मंदरमेरु संबंधी पुष्करवृक्ष एवं शाल्मलीवृक्ष पर विराजमान जिनमंदिर एवं जिनबिम्बों की पूजा है। पुष्कर वृक्ष के परिवार वृक्ष 5 लाख, 60 हजार, 479 है एवं शाल्मली वृक्ष के परिवार वृक्ष भी 5 लाख, 60 हजार, 479 है। अतः दोनों के मिलाकर 11 लाख, 20 हजार, 958 परिवार वृक्षों पर विराजमान जिनमंदिर एवं जिनप्रतिमाओं को इस पूजा में अर्घ्य चढ़ाया है।

पूजा नं. 6 **विद्युन्माली मेरु संबंधी पुष्करतरु शाल्मलीतरु जिनालय पूजा** में विद्युन्माली मेरु के ईशान, नैऋत्यकोण में पुष्कर एवं शाल्मलि वृक्ष पर विराजमान जिनमंदिर एवं जिनबिम्बों की पूजा है। इस पूजा में भी 11 लाख, 20 हजार, 958 परिवार वृक्षों पर विराजमान जिनमंदिर एवं जिनप्रतिमाओं को अर्घ्य चढ़ाया है। इस अन्तिम पूजा के पूर्णार्घ्य में पांचों मेरु सम्बन्धी 36 लाख, 43 हजार, 120 प्रमाण परिवार वृक्षों पर विराजमान जिनगृह एवं जिनप्रतिमाओं को पूर्णार्घ्य चढ़ाते हुए सौ-सौ बार नमन किया है।

इस प्रकार इस विधान में 10 अकृत्रिम वृक्ष जिनालय एवं उनके परिवार वृक्षों पर विराजमान अकृत्रिम जिनमंदिर एवं जिनप्रतिमाओं को अर्घ्य चढ़ाकर महान पुण्य का संचय होता है और निश्चित ही एक दिन इन अकृत्रिम जिनमंदिर एवं जिनप्रतिमाओं के दर्शन का सौभाग्य भी अवश्य प्राप्त होगा।

इस विधान में कुल 6 पूजा, 20 अर्घ्य, 11 पूर्णार्घ्य एवं 7 जयमाला हैं। इसके बाद प्रशस्ति है, फिर अकृत्रिम वृक्ष जिनालय विधान की मंगल आरती है। इस विधान को करने, कराने वाले सभी भव्यजीव इन अकृत्रिम प्रतिमाओं के दर्शन करते हुए अनुक्रम से शिवसुख को प्राप्त करें यही मंगल भावना है।

दो शब्द

-आर्यिका स्वर्णमती

इन ढाईद्वीप में पंचमेरू, संबंधी वृक्ष अकृत्रिम हैं।
छत्तीस लाख अरु सहस तेतालिस, एक सौ बीस प्रमाण कहे हैं।।
दश जिनमंदिर अकृत्रिम, सबमें देवभवन शाश्वत हैं।
सबमें जिनगृह जिनप्रतिमायें, सौ सौ बार नमन नितप्रति हैं।।

बीसवीं सदी में मुनि परम्परा को जीवन्त करने वाले युगप्रवर्तक प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के 3 बार दर्शन करने वाली, उनसे अनुभव ज्ञान प्राप्त करने वाली, प्रथम पट्टशिष्य चारित्र चूड़ामणि आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा को प्राप्त कर ज्ञानमती नाम को सार्थक करने वाली, बीसवीं सदी की युगप्रवर्तिका, प्रथम बालब्रह्मचारिणी आर्यिका, चारित्रचन्द्रिका, आर्यिका शिरोमणि गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी हैं।

पूज्य माताजी ने जिनधर्म, जिनागम की विशेष प्रभावना करते हुए अब तक लगभग 400 ग्रंथों की रचना की हैं जिनमें से अभी कुछ ग्रंथ अप्रकाशित हैं। आज के भौतिक युग में लोगों को धर्ममार्ग में लगाने के लिए भगवान की भक्ति, पूजा विधान, स्तुति आदि सशक्त माध्यम है।

माताजी की लेखनी से लिखा गया एक-एक शब्द मोती की माला के समान सुशोभित है। पूज्य माताजी ने भगवान के सहस्रनाम मंत्र से लेखनी का शुभारम्भ किया। अष्टसहस्री ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद किया। षट्खण्डागम सूत्र ग्रंथ पर **'सिद्धान्त चिन्तामणि'** नाम से संस्कृत टीका 16 पुस्तकों की 3100 पृष्ठों में लिखकर एक कीर्तिमान स्थापित किया है। नियमसार ग्रंथ पर **'स्याद्वादचिन्तामणि'** नाम से संस्कृत टीका एवं समयसार ग्रंथ पर **'ज्ञानज्योति'** हिन्दी टीका लिखी है।

विधानों में इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, तीनलोक, सिद्धचक्र, समवसरण, जम्बूद्वीप आदि बड़े विधानों के साथ-साथ शान्ति विधान आदि छोटे विधानों को मिलाकर 100 की संख्या में विधानों की रचना की है। 365 दिन में प्रतिदिन कहीं न कहीं पूज्य माताजी द्वारा रचित विधान होते ही रहते हैं। जम्बूद्वीप पर प्रतिदिन कोई न कोई विधान होता ही रहता है।

विधानों की श्रृंखला में यह **'अकृत्रिम वृक्ष जिनालय विधान'** एक अतिशयकारी विधान है, जिनमें ढाईद्वीप के 10 अकृत्रिम वृक्ष एवं उनके परिवार वृक्षों पर विराजमान छत्तीस लाख, तेतालिस हजार, एक सौ बीस जिनमंदिर एवं उनमें विराजमान जिनबिम्बों की पूजा है। एक दिन में सम्पन्न करने वाला यह विधान महान पुण्य को प्रदान करने वाला है।

पूज्य माताजी के ज्ञानगुण की पूजा करते हुए मैं यही भावना करती हूँ कि पूज्य माताजी के गुण मुझमें अवतरित हों। यह विधान मेरे जीवन में श्रुतज्ञान, केवलज्ञान को प्राप्त करावे, इसी मंगल भावना के साथ पूज्य माताजी के पावन चरणों में कोटि-कोटि नमन।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान– टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि– आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति– अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र–** गोयल, **नाम–** कु. मैना

माता-पिता– श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत– ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा– चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा– वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व– अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि– सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा– हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा– पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा– 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा– जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषयानुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	मंगलाचरण	1
2.	जम्बूवृक्षादि दशवृक्ष जिनालय पूजा	3
3.	सुदर्शनमेरु संबंधी जम्बूवृक्ष शाल्मलिवृक्ष जिनालय पूजा	8
4.	विजयमेरु संबंधी धातकीवृक्ष शाल्मलिवृक्ष जिनालय पूजा	14
5.	अचलमेरु संबंधी धातकीवृक्ष शाल्मलिवृक्ष जिनालय पूजा	20
6.	मंदरमेरु संबंधी पुष्करतरु शाल्मलितरु जिनालय पूजा	26
7.	विद्युन्मालीमेरु संबंधी पुष्करतरु शाल्मलिवृक्ष जिनालय पूजा	32
8.	बड़ी जयमाला	39
9.	प्रशस्ति	42
10.	अकृत्रिम वृक्ष जिनालय की मंगल आरती	43
11.	जम्बूद्वीप तीर्थ वंदना	44
12.	भजन	48

मण्डल का नक्शा

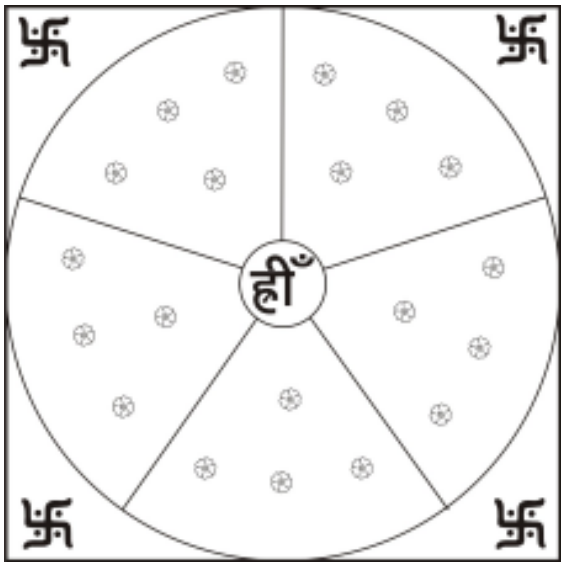

5 कोष्ठक

प्रथम कोष्ठक में	-4
द्वितीय कोष्ठक में	-4
तृतीय कोष्ठक में	-4
चतुर्थ कोष्ठक में	-4
पंचम कोष्ठक में	-4
कुल	**- 20 अर्घ्य**

पूजा-6, कुल अर्घ्य-20, पूर्णार्घ्य-11, जयमाला-7

अकृत्रिम वृक्ष जिनालय विधान

(जंबूवृक्षादि 10 वृक्ष जिनालय विधान)

मंगलाचरण

(श्री गौतम स्वामी प्रणीत चैत्यभक्ति से उद्धृत)

अकृतानि कृतानि चाप्रमेय–द्युतिमन्ति द्युतिमत्सु मंदिरेषु।
मनुजामरपूजितानि वंदे प्रतिबिम्बानि जगत्त्रये जिनानाम्।।1।।

द्युतिमंडल भासुरांगयष्टीः, प्रतिमा अप्रतिमा जिनोत्तमानाम्।
भुवनेषु विभूतये प्रवृत्ता, वपुषा प्राञ्जलिरस्मि वन्दमानः।2।।

विगतायुध विक्रियाविभूषाः, प्रकृतिस्थाः कृतिनां जिनेश्वराणाम्।
प्रतिमाः प्रतिमागृहेषु कांत्या–प्रतिमा कल्मषशान्तयेऽभिवन्दे।।3।।

कथयन्ति कषायमुक्ति लक्ष्मीं, परया शान्ततया भवान्तकानाम्।
प्रणमाम्यभिरूपमूर्तिमन्ति, प्रतिरूपाणि विशुद्धये जिनानाम्।।4।।

–हिंदी पद्यानुवाद–चौबोलछंद–

द्युतिकर जिनगृह में अकृत्रिम, कृत्रिम अप्रमेय द्युतिमान।
नर सुर पूजित भुवनत्रय के, सब जिनबिंब नमूँ गुणखान।।1।।

द्युतिमंडल भासुर तनु शोभित, जिनवर प्रतिमा अप्रतिम हैं।
जग में वैभव हेतु उन्हें, वंदूं अंजलिकर शिर नत मैं।।2।।

आयुध विक्रिय भूषा विरहित, जिनगृह में प्रतिमा प्राकृत।
कांती से अनुपम हैं कल्मष, शांति हेतु मैं नमूँ सतत।।3।।

परम शांति से कषाय मुक्ती, को कहती मनहर अभिरूप।
भव के अंतक जिन की प्रतिमा, प्रणमूँ मन विशुद्धि के हेतु।।4।।

–अनुष्टुप्–

जंबूवृक्षादि शाखासु, परिवारद्रुमेष्वपि।
जिनालया जिनार्चाश्च, तांस्ता नौमि शिवाप्तये।।5।।

जंबू–शाल्मलि आदि दश तरु, शाखाओं पर दश मंदिर।
उन परिवार तरू पर भी, जिनगृह प्रतिमा वंदूं शिवकर।।5।।

।।अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

पूजा नं.–1

जंबूवृक्षादि दश वृक्ष जिनालय पूजा

(समुच्चय पूजा)

–शंभु छंद–

पाँचों मेरू के उत्तर में उत्तर कुरु में तरु पांच कहे।
ये जंबू धात्री पुष्कर हैं इनमें शाश्वत जिनसद्म कहे।।
दक्षिण में पाँच देवकुरु में शाल्मलि तरु पाँच कहे शाश्वत।
इन दश वृक्षों के जिनमंदिर जिनप्रतिमायें पूजूं नितप्रति।।1।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपस्थ–उत्तरकुरुदेवकुरुस्थितजंबूवृक्षादिदशवृक्षजिनालय–जिनबिंबतत्परिवारवृक्षजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपस्थ–उत्तरकुरुदेवकुरुस्थितजंबूवृक्षादिदशवृक्षजिनालय–जिनबिंबतत्परिवारवृक्षजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपस्थ–उत्तरकुरुदेवकुरुस्थितजंबूवृक्षादिदशवृक्षजिनालय–जिनबिंबतत्परिवारवृक्षजिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टकं–गीता छंद–

जल पद्मद्रह का लाय, उज्ज्वल कनक झारी में भरा।
दे धार जिनपद पद्म को, आनंदरस में मन भरा।।
दशवृक्ष के शाश्वत जिनालय, जैन प्रतिमा को जजूँ।
परिवार तरु के जिनभवन को, जजत भव दुख से बचूँ।।1।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपस्थ–उत्तरकुरुदेवकुरुस्थितजंबूवृक्षादिदशवृक्षजिनालय–जिनबिंबेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गोशीर चंदन घिस सुगन्धित, भर कटोरी में लिया।
जिन पादपद्म चढ़ाय श्रद्धा, भाव से अर्चन किया।।दश.।।2।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपस्थ–उत्तरकुरुदेवकुरुस्थितजंबूवृक्षादिदशवृक्षजिनालय–जिनबिंबेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अति धवल तंदुल चंद्र की, कांती सदृश भर थाल की।
जिन चन्द्र सन्मुख पुंज धर, नाऊं खुशी से भाल मैं।।
दशवृक्ष के शाश्वत जिनालय, जैन प्रतिमा को जजूँ।
परिवार तरु के जिनभवन को, जजत भव दुख से बचूँ।।3।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपस्थ–उत्तरकुरु-देवकुरुस्थितजंबूआदिदशवृक्षजिनालय–जिनबिंबेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मचकुंद चंपक औ कदंबक, पुष्प निज कर से चुने।
जिनराज पद अरविन्द को, जजतें सभी दुःख को धुने।।दश.।।4।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपस्थ–उत्तरकुरु-देवकुरुस्थितजंबूआदिदशवृक्षजिनालय–जिनबिंबेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गोक्षीर तंदुल शर्करायुत, फेनि शतंछिद्रा[1] बनी।
निज क्षुधारोग विनाश हेतु, पूजहूँ त्रिभुवन धनी।।दश.।।5।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपस्थ–उत्तरकुरु-देवकुरुस्थितजंबूआदिदशवृक्षजिनालय–जिनबिंबेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर कनक दीपक सुरभितघृत, कार्पास बाती जगमगे।
सब दिशा हों उद्योत उससे, जजों जिनपद सुख जगे।।दश.।।6।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपस्थ–उत्तरकुरु-देवकुरुस्थितजंबूआदिदशवृक्षजिनालय–जिनबिंबेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर धूपदह में धूप दहते, धूम उड़ता दशदिशा।
वसु कर्म जरते देखकर, मोहारि भगता सब दिशा।।दश.।।7।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपस्थ–उत्तरकुरु-देवकुरुस्थितजंबूआदिदशवृक्षजिनालय–जिनबिंबेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल आम्र कमरख सेव केला, और एला थाल भर।
जिनराज सन्मुख भेंटकर, सिद्धिप्रिया तत्काल वर।।दश.।।8।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपस्थ–उत्तरकुरु-देवकुरुस्थितजंबूआदिदशवृक्षजिनालय–जिनबिंबेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. घेवर।

वर नीर गंधाक्षत सुमन, चरु दीप धूप फलौघ ले।
शुभ अर्घ सों जिन चरण पूजत, पाप अरि सेना टले।।दश.।।9।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपस्थ-उत्तरकुरु-देवकुरुस्थितजंबूआदिदशवृक्षजिनालय-जिनबिंबेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-सोरठा-

क्षीरोदधि उनहार, उज्ज्वल जल ले भृंग में।
श्रीजिनचरण सरोज, धारा देते भव मिटे।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरतरु के सुम लेय, प्रभुपद में अर्पण करूँ।
कामदेव मद नाश, पाऊँ आनंद धाम मैं।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं अकृत्रिमजंबूवृक्षादिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।**

जयमाला

-दोहा-

भव विजयी जिनराज हैं, भव संकट हरतार।
भविजन तुम गुण गाय के, होते भवदधि पार।।1।।

-शंभु छंद-

जिनभवनों में जिनप्रतिमायें, हैं शाश्वत सिद्ध कही जातीं।
बहु रत्नों की सुन्दर आकृति, छवि वीतराग मन को भाती।।
रत्नों के सिंहासन ऊपर, प्रतिमा पद्मासन से राजें।
भामंडल की कांती ऐसी, जिससे कोटी सूरज लाजें।।2।।

मणि मुक्ता लटक रहीं जिनमें, त्रय छत्र फिरें महिमाशाली।
ढोरें नित चौंसठ चमर यक्ष, निर्झर तम श्वेत चमकशाली।।
वसु मंगल द्रव्य अनूपम हैं, मंगल घट धूप घड़े शोभे।
मणि कंचन की मालायें औ, पुष्पों की माला मन लोभे।।3।।

मानस्तंभों में जिनमूर्ती, दर्शन कर मान गलित होवे।
सब अद्भुत रचना रत्नमयी, दर्शक का मिथ्या मल धोवे।।
प्रतिमंदिर इक सौ आठ बिंब, सब पाप कलाप नशाते हैं।
मुक्ती लक्ष्मी के प्रिय वल्लभ, सब को शिवमार्ग दिखाते हैं।।4।।

बावड़िया कमल सहित शोभें, बहु रत्नों के सुर भवन बने।
सुर अप्सरियां खग खेचरनी, क्रीड़ा करतीं मन मुदित घनें।।
वहां पर नित चारण ऋषिगण भी, नित विहरण करते दीखे हैं।
शुद्धात्म ध्यानारूढ़ कहीं, समरसमय अमृत पीते हैं।।5।।

वर्णादि सहित यह पुद्गल है, इससे सम्बन्ध नहीं मेरा।
यह तन भी मुझसे पृथक् कहा, इससे संश्लेष नहीं मेरा।।
इक मोहराज ही इस जग में बहुविध के नाच नचाता है।
जो पर से निज को पृथक् किये, उसका जग में क्या नाता है।।6।।

इन मिथ्या भ्रांति अविद्या ने, मुझको इस तन में घेरा है।
सम्यक् विद्या के होते ही, मिटता भव भव का फेरा है।।
रागादि भाव भी औपाधिक, वे भी जब मुझसे भिन्न कहें।
फिर धन गृह सुत मित्रादिकजन, वे तो बिल्कुल ही पृथक् रहें।।7।।

हे नाथ! आपकी भक्ती से, मुझमें वह शक्ती आ जावे।
मैं पर से निज को भिन्न करूँ, यह सम्यक् युक्ति आ जावे।।
चैतन्य चमत्कारी आत्मा चिंतामणि कल्पतरू निधि ही।
मैं उसमें ही बस रम जाऊँ, समरस पीयूष पिऊँ नित ही।।8।।

दुख इष्ट वियोग अनिष्ट योग, भय शोकादिक का भान न हो।
केवल सुखदर्शन ज्ञानवीर्य धारी आत्मा का ध्यान रहो।।
परमानंदामृत निर्झर में, स्नान करूँ मल धो डालूँ।
अपने अनन्तगुण पुंजरूप, शिवपद साम्राज्य तुरत पालूँ।।9।।

जो दर्शन पूजन करते हैं, वे रत्नत्रय निधि पाते हैं।
जो वंदन करें परोक्ष सदा, वे भी स्वातम सुख पाते हैं।।

बस नाथ! सुयश तुम सुन करके, चरणों में आन पुकारा है।
अब मुझ को भी प्रभु पार करो, बस तेरा एक सहारा है।।10।।

इतनी ही आशा लेकर मैं, हे नाथ! शरण में आया हूँ।
अब किंचित भी ना देर करो, भव भव दुःख से अकुलाया हूँ।।
बहु जन्म अनंतों में संचित, अब संचय शीघ्र समाप्त करो।
भगवन् ! सुज्ञानमती लक्ष्मी देकर अब मुझे कृतार्थ करो।।11।।

–घत्ता–

सब कर्म निकंदा, हर भव फंदा, आनंदकंदा जो ध्यावें।
सजू 'ज्ञानमती' कर निज संपति भर, मुक्तिरमावर सुख पावें।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपस्थ-उत्तरकुरुदेवकुरुस्थित-जंबूवृक्षादिदशवृक्षजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–नरेन्द्र छंद–

जो अकृत्रिम वृक्षजिनालय, पूजा करते रुचि से।
अकृत्रिम जिनगृह जिनप्रतिमा, वंदन करते मुद से।।
वे अकृत्रिम शाश्वत अनुपम, शिवसुख प्राप्त करेंगे।
केवल 'ज्ञानमती' लक्ष्मी सह, गुण आनन्त्य भरेंगे।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.–2

सुदर्शनमेरु संबंधि जंबूवृक्ष शाल्मलि वृक्ष जिनालय पूजा

-अथ स्थापना–गीताछन्द-

गिरि मेरु के उत्तर दिशी, उत्तरकुरु शोभे अहा।
उसमें सुदिक् ईशान के, जंबूतरू राजे महा।।
दक्षिण दिशा में देवकुरु, नैऋत्य कोण सुहावनी।
तरु शाल्मलि शुभरत्नमय, सुन्दर दिखे शाखाघनी।।1।।

–दोहा–

दोनों तरु की शाख पर, दो श्री जिनवर गेह।
आह्वानन कर मैं जजूँ, सदा हृदय धर नेह।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरोः ईशाननैऋत्यकोणयोः जम्बूशाल्मलिवृक्षसम्बन्धि-जिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरोः ईशाननैऋत्यकोणयोः जम्बूशाल्मलिवृक्षसम्बन्धि-जिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरोः ईशाननैऋत्यकोणयोः जम्बूशाल्मलिवृक्षसम्बन्धि-जिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

-अष्टक-अडिल्लछंद-

सुरगंगा को नीर, सुरभि प्रासुक किया।
जिनपद धारा देय, सकल मल क्षय किया।।
जंबू शाल्मलि वृक्ष, तने जिनधाम को।
जो पूजें धर प्रीति, लहे शिव धाम को।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिजम्बूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थसर्व-जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि घनसार, सुकुंकुम गंध ले।
सिद्धनि के प्रतिबिंब, चरण को चर्च ले।।

जंबू शाल्मलि वृक्ष, तने जिनधाम को।
जो पूजे धर प्रीति, लहे शिव धाम को।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिजम्बूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थसर्व-जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जल से धौत सुअक्षत, मुक्ताफल समा।
पुंज धरूँ जिनसन्मुख, भक्ती अनुपमा।।जंबू.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिजम्बूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थसर्व-जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही चमेली कमल, केवड़ा फूल ले।
प्रभु के चरण चढ़ाऊँ, भव के दुख टले।।जंबू.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिजम्बूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थसर्व-जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्यजात[1] घेवर बावर मोदक घने।
चरु की पूजा नित्य क्षुधा व्याधी हने।।जंबू.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिजम्बूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थसर्व-जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नदीप की ज्योति, दशों दिश तम हरे।
अंतर भेद विज्ञान, प्रगट हो भ्रम टरे।।जंबू.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिजम्बूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थसर्व-जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अगनि में खेय, धूम दशदिश उड़े।
कर्म पुंज प्रज्वले, सतत आनंद बढ़े।।जंबू.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिजम्बूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थसर्व-जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरतरु के परिपक्व, सरस फल लाय के।
प्रभु की पूजा करुँ हरष गुण गाय के।।

1. ताजे।

जंबू शाल्मलि वृक्ष तने जिनधाम को।
जो पूजें धर प्रीति, लहे शिव धाम को।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिजम्बूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थसर्व-जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वारि सुचंदन अक्षत, फूल चरु मिले।
दीप धूप शुचि उत्तम, फल युत अर्घ्य ले।।जंबू.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिजम्बूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थसर्व-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

यमुना सरिता नीर, कंचन झारी में भरा।
जिनपद धारा देत, शांति करो सब लोक में ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल कमल अरविंद, सुरभित फूलों को चुने।
जिनपद पंकज अर्घ्य, यश सौरभ चहुँदिश भ्रमें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

–अथ प्रत्येक अर्घ्य-सोरठा–

जंबू शाल्मलि वृक्ष, तिनके जिनगृह को जजूँ।
पुष्पांजलि कर नित्य, जो पूजें सो शिव लहें।।1।।

।।अथ जम्बूवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थाने मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

–गीताछन्द–

'जम्बूतरू' की उत्तरी, शाखा विषे जिनधाम है।
सब देव देवी करें अर्चा, मैं जजूँ इह थान है।।
वर नीर चंदन आदि वसुविध, द्रव्य थाली में लिया।
संसार रोग निवार स्वामी, अर्घ्य से पूजन किया।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिजंबूवृक्षस्य उत्तरशाखायां जिनालयस्थसर्व-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जम्बूतरू' परिवार तरू, चारों तरफ से घेर के।
इक लाख चालिस सहस इक सौ, हैं उनीस प्रमाण से।।
इन सभी तरू में देवगृह में, श्री जिनालय सासते।
इन जिनगृहों जिनमूर्तियों को, पूजते भव नाशते।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिजंबूवृक्षस्य एकलक्षचत्वारिंशत्सहस्रएकशत-एकोनविंशतिपरिवारवृक्षजिनालयस्थसर्वजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'द्रुम शाल्मलि' की दक्षिणी, शाखा उपरि जिनगेह है।
योगी सदा ध्याते उन्हें, हम भी जजें धर नेह है।।
वर नीर चंदन आदि वसुविध, द्रव्य थाली में लिया।
संसार रोग निवार स्वामी, अर्घ्य से पूजन किया।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिशाल्मलिवृक्षस्य दक्षिणशाखायां जिनालय-स्थजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शाल्मलितरू को घेर कर, परिवार वृक्ष सुशोभते।
इक लाख चालिस सहस इक सौ, हैं उन्नीस प्रमाण से।
इन वृक्ष में भी देवभवनों, में जिनालय अकृत हैं।
उन सभी जिनगृह को जजूं, जिनबिंब पूजूँ भक्ति से।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिशाल्मलिवृक्षस्य एकलक्षचत्वारिंशत्सहस्रएक-शतैकोनविंशतिपरिवारवृक्षजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य-दोहा-

जंबू शाल्मलि वृक्ष पर, दो जिनमंदिर सिद्ध।
पूर्ण अर्घ्य ले मैं जजूँ, पाऊँ सौख्य समृद्ध।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिजंबूशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-स्थसर्वजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोय लाख अस्सी सहस, दो सौ अड़तिस रम्य।
जजूं सर्व परिवार तरू, के जिनगृह जिनबिंब।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिजंबूशाल्मलिपरिवारवृक्षजिनालय-स्थसर्वजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं अकृत्रिमजंबूवृक्षादिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।**

जयमाला

-सोरठा-

तरु की शाखा मांहि, रत्नमयी जिनबिंब हैं।
तिनकी यह जयमाल, भक्ति भाव से मैं पढूँ।।1।।

-नरेन्द्र छंद-

जंबूतरु का स्वर्णिम स्थल, पांच शतक योजन है।
इस थल का परकोटा कांचन-मयी मनो मोहन है।।
पीठ आठ योजन का ऊँचा, मध्य माहिं चांदी का।
इस पर जम्बूवृक्ष अकृत्रिम, पृथ्वीमय रत्नों का।।2।।

यह तरु तुंग आठ योजन है, वज्रमयी जड़ जानो।
मणिमय तना हरित मोटाई, एक कोश परमानो।।
तरु की चार दिशाओं में हैं, चार महाशाखायें।
छह योजन की लंबी इतने, अंतर से लहरायें।।3।।

मरकत कर्केतन मूँगा, कंचन के पत्ते उत्तम।
पांच वर्ण रत्नों के अंकुर, फल अरु पुष्प अनूपम।।
इसमें फल जामुन सदृश हैं, कोमल चिकने दिखते।
रत्नमयी हैं फिर भी अद्भुत, पवन लगत ही हिलते।।4।।

उत्तर शाखा पर जिन मंदिर, सुरगृह त्रय शाखा पे।
सम्यक्त्वी आदर व अनादर, व्यंतर रहते उनपे।।
तरु को चारों तरफ घेर कर, बारह पद्म देवियाँ।
उनके अंतराल में तरु की, परिकर वृक्ष पंक्तियां।।5।।

एक लाख चालीस हजार, इक सौ उन्नीस कहाएं।
इन जंबू परिवार वृक्ष पर, सुर परिवार रहायें।।
मेरू की ईशान दिशा में, नीलाचल के दाएं।
माल्यवन्त के पश्चिम में, सीता के पूर्व कहाएं।।6।।

तरु स्थल के चारों तरफे, त्रय वन खंड कहाते।
फल फूलों युत सुरमहलों युत, जल वापी युत भाते।।
इस द्रुम के जिनगृह में इक सौ-आठ जिनेश्वर प्रतिमा।
इसी तरह शाल्मली वृक्ष की जानो सारी रचना।।7।।

शाल्मलि तरु के अधिपति व्यंतर, वेणु वेणुधारी हैं।
ये सुर सम्यक्त्वी जिनमत के, प्रेमी गुणधारी हैं।।
जितने जंबू शाल्मलि तरु हैं, उतने जिनमंदिर हैं।
क्योंकि सभी पर सुर रहते हैं, सबमें जिनमंदिर हैं।।8।।

दो चैत्यालय मुख्य अकृत्रिम, हैं स्वतन्त्र दो तरु के।
उनकी अरु सब जिन प्रतिमा की, करूँ वंदना रुचि से।।
सुर किन्नरियां नित गुण गातीं, वीणा की लहरों से।
दर्शन करके नर्तन कीर्तन, करतीं भक्ति स्वरों से।।9।।

–घत्ता–

जय जय जिन प्रतिमा अद्भुत महिमा, पढ़े सुने जो जयमाला।
जय 'ज्ञानमती' श्री सिद्धिवधू प्रिय, सो नर पावे खुशहाला ।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिजंबूशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। परिपुष्पांजलिः।

–नरेन्द्र छंद–

जो अकृत्रिम वृक्षजिनालय, पूजा करते रुचि से।
अकृत्रिम जिनगृह जिनप्रतिमा, वंदन करते मुद से।।
वे अकृत्रिम शाश्वत अनुपम, शिवसुख प्राप्त करेंगे।
केवल 'ज्ञानमती' लक्ष्मी सह, गुण आनन्त्य भरेंगे।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.–3

विजयमेरु संबंधि धातकी–शाल्मलिवृक्ष जिनालय पूजा

–अथ स्थापना–नरेन्द्र छंद–

विजयमेरु के उत्तरकुरु में, वृक्ष धातकी सोहे।
इसी मेरु के देवकुरु में, शाल्मलि तहँ मन मोहे।।
इनकी एक एक शाखा पर, जिनमंदिर सुखकारी।
इन दो मंदिर की जिनप्रतिमा, पूजों अघतम हारी।।1।।

–दोहा–

तरु के सब जिनराज की, आह्वानन विधि ठान।
आवो आवो नाथ! अब, करो सकल दुःख हान।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षसंबंधीद्वयजिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षसंबंधीद्वयजिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षसंबंधीद्वयजिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

–अथाष्टकं–नाराच छंद–

हिमाद्रि गंगनीर लाय, स्वर्ण भृंग में भरूँ।
जिनेश पादपद्म धार, देत ही तृषा हरूँ।।
तरू तने जिनेन्द्र को, सुरेन्द्र पूजते वहाँ।
महान भक्ति भाव धार, मैं जजूँ उन्हें यहाँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-स्थजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति।

सुगंध अष्टगंध लेय, हर्ष भाव ठानिये।
जिनेश पादपद्म चर्च, मोह ताप हानिये।।

तरू तने जिनेन्द्र को, सुरेन्द्र पूजते वहां।
महान भक्ति भाव धार, मैं जजूं उन्हें यहाँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति।

कमोद जीरिका अखंड, शालि धान्य लाइये।
सुपुंज आप पास दे, अखंड सौख्य पाइये।।तरू तने.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति।

गुलाब कुन्द पारिजात, पुष्प अंजली लिये।
जिनेश पाद पूज कामदेव को हनीजिये।।तरू तने.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति।

सुमिष्ट फेनि लाडु व्यंजनादि भांति भांति के।
जिनेशपाद पूजते, भगे क्षुधा पिशाचि के।।तरू तने.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति।

अखंड ज्योतिवान दीप, स्वर्ण पात्र में जले।
जिनेन्द्र पाद पूजते हि, मोहध्वांत भी टले।।तरू तने.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति।

दशांग धूप लेय अग्नि, पात्र में सुखेइये।
जिनेश सन्निधी तुरंत कर्म भस्म देखिये।।तरू तने.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति।

इलायची लवंग दाख, औ बदाम लाइये।
जिनेश को चढ़ाय मुक्ति, वल्लभा को पाइये।।

तरू तने जिनेन्द्र को, सुरेन्द्र पूजते वहां।
महान भक्ति भाव धार, मैं जजूं उन्हें यहाँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति।

जलादि अष्ट द्रव्य लेय अर्घ्य को बनाइये।
अनर्घ्य सौख्य हेतु नित्य नाथ को चढ़ाइये।।तरू तने.।9।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति।

–सोरठा–

यमुना सरिता नीर, कंचन झारी में भरा।
जिनपद धारा देय, शांति करो सब लोक में।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल कमल अरविंद, सुरभित फूलों को चुने।
जिनपद पंकज अर्प्य, यश सौरभ चहुंदिश भ्रमें।।11।

दिव्यपुष्पांजलिः।

–अथ प्रत्येक अर्घ्य–दोहा–

वृक्ष धातकी शाल्मली,पूर्वधातकी माहिं।
उनके जिनगृह नित जजूँ, पुष्पांजली चढ़ाहिं।।1।।

इति विजयमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थाने मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–नरेन्द्र छन्द–

विजयमेरु ईशान कोण में, वृक्ष आंवले जैसा।
तरु की उत्तर गत शाखा पर, जिनगृह अनुपम वैसा।।
यतिपति वंदित जिनवर प्रतिमा, कलिमल नाश करे हैं।
पूजन करते भविजन मिलकर, यम का पाश हरे हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिधातकीवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजय मेरु ईशान दिशा में, वृक्ष धातकी सोहै।
अकृत्रिम जिनगृह जिनप्रतिमा, सुरगण का मन मोहें।।
धात्रीतरु परिवार वृक्ष, दो लाख सहस अस्सी हैं।
दो सौ उनतालिस इन सबमें, प्रतिमा शाश्वतिकी हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिधातकीवृक्षस्य द्विलक्षाशीतिसहस्रद्विशतएकोन-त्रिंशत्परिवारवृक्षजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु नैऋत्य कोण में, शाल्मली द्रुम भारी।
इसकी दक्षिणगत शाखा पे, जिनमंदिर भवहारी।।
गणधर भी नित ध्याते रहते, मन में उन प्रतिमा को।
जनम जनम अघ नाशन हेतू, हम भी पूजे उनको।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजय मेरु नैऋत्य कोण में, शाल्मलि तरु परिकर नित।
दोय लाख अस्सी हजार, दो सौ उनतालीस शाश्वत।।
सब वृक्षों में देवभवन में, जिनगृह जिनप्रतिमायें।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, हम अनुपम फल पायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिशाल्मलिवृक्षस्य द्विलक्षाशीतिसहस्रद्विशतैकोन-त्रिंशत्परिवारवृक्षजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य-दोहा-

पूर्वधातकी खंड में, धातकि शाल्मलि वृक्ष।
इनके श्री जिनभवन को, पूजूँ कर मन स्वच्छ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन द्वय के परिवार तरु, पांच लाख अति रम्य।
साठ सहस अरु चार सौ, अट्ठत्तर तरु रम्य।।1।।

सबमें सुरगृह मान्य हैं, सबमें जिनवर धाम।
सबमें जिनप्रतिमा जजूँ, शत शत करूँ प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलीपरिवारवृक्षस्थित-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्यपुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं अकृत्रिमजंबूवृक्षादिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।**

जयमाला

-नरेन्द्र छंद-

विजयमेरु ईशानदिशा में, वृक्ष धातकी सोहे।
नैऋत दिश में वृक्ष शाल्मलि, सुरगण का मन मोहे।।
इक इक के परिवार तरु दो, लाख सहस अस्सी हैं।
दो सौ अड़तीस इतने सब में, प्रतिमा शाश्वतकी हैं।।1।।

-नाराच छंद-

जिनेश बिंब एक सौ सुआठ सर्व वृक्ष में।
प्रमुख्यता धरे महान एक ही तरु इमें।।
नमो नमो जिनेश तोहि धर्म के स्वरूप हो।
कलंक पंक क्षालने सदा सुतीर्थ रूप हो।।2।।

अनादि हो अनन्त हो प्रसिद्ध सिद्ध रूप हो।
दयाल धर्मपाल तीन काल एक रूप हो।।
नमो नमो जिनेश तोहि धर्म के स्वरूप हो।
कलंक पंक क्षालने सदा सुतीर्थ रूप हो।।3।।

अलोक लोक में प्रधान तीन लोक नाथ हो।
अनेक रिद्धि के धनी सुभक्ति के सनाथ हो।।
नमो नमो जिनेश तोहि धर्म के स्वरूप हो।
कलंक पंक क्षालने सदा सुतीर्थ रूप हो।।4।।

महान दीप्तिमान मोहशत्रु को कृपाण हो।
प्रसन्न सौम्य आस्य[1] हो पवित्र हो पुमान हो।।
नमो नमो जिनेश तोहि धर्म के स्वरूप हो।
कलंक पंक क्षालने सदा सुतीर्थ रूप हो।।5।।

दिनेश[2] तें विशेष तेज की महान राशि हो।
कुमोदनी भवीक हेतु वें सुधानिवास[3] हो।।
नमो नमो जिनेश तोहि धर्म के स्वरूप हो।
कलंक पंक क्षालने सदा सुतीर्थ रूप हो।।6।।

भवाब्धि डूबते तिन्हें तुम्हीं सुकर्णधार हो।
गुणौघ[4] रत्न के समुद्र सार में सु सार हो।।
नमो नमो जिनेश तोहि धर्म के स्वरूप हो।
कलंक पंक क्षालने सदा सुतीर्थ रूप हो।।7।।

–दोहा–

तुम गुण गण मणि अगम हैं, को गण पावे पार।
जो गुण लव कंठहिं धरे, सो उतरे भव पार।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयस्थ-जिनबिंबेभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–नरेन्द्र छंद–

जो अकृत्रिम वृक्षजिनालय, पूजा करते रुचि से।
अकृत्रिम जिनगृह जिनप्रतिमा, वंदन करते मुद से।।
वे अकृत्रिम शाश्वत अनुपम, शिवसुख प्राप्त करेंगे।
केवल 'ज्ञानमती' लक्ष्मी सह, गुण आनन्त्य भरेंगे।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

1. मुख। 2. सूर्य। 3. चन्द्र। 4. गुणसमूह।

पूजा नं.–4

अचलमेरु संबंधि धातकी वृक्ष शाल्मलि वृक्ष जिनालय पूजा

–अथ स्थापना–हरिगीतिका छंद–

(चाल–सम्मेदगढ़ गिरनार....)

वरद्वीप धातकि में अपरदिश, बीच सुरगिरि अचल है।
ताके विदिश ईशान में, शुभ धातकी द्रुम अतुल है।।
सुरगिरी के नैऋत्य शाश्वत, शाल्मली द्रुम सोहना।
द्वय वृक्ष शाखा पर जिनालय, पूजहूँ मन मोहना ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलीद्वयवृक्षस्थितजिनालयस्थ-जिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलीद्वयवृक्षस्थितजिनालयस्थ-जिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलीद्वयवृक्षस्थितजिनालयस्थ-जिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

–अथाष्टक–

जल अमल ले जिनपाद पूजूँ, कर्म मल धुल जायेगा।
आत्मीक समता रस विमल, आनंद अनुभव आयेगा।।
पृथ्वीमयी दो वृक्ष के, जिनगेह मणिमय मूर्तियाँ।
जयवंत होवें नित्य ही, चिन्तामणी जिनमूर्तियाँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन सुगंधित ले जिनेश्वर, पद जजूँ आनन्द से।
स्वात्मानुभव आल्हाद पाकर, छूटहूँ जग द्वन्द से।।

पृथ्वीमयी दो वृक्ष के, जिनगेह मणिमय मूर्तियां।
जयवंत होवें नित्य ही, चिंतामणी जिनमूर्तियां।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदाकिरण सम धवल तंदुल, पुंज जिन आगे धरूँ।
वर धर्म शुक्ल सुध्यान निर्मल, पाय आतम निधि वरूँ।।पृथ्वी.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदार चंपक पुष्प सुरभित, लाय जिनपद पूजते।
निज आत्मगुण कलिका खिले, जन भ्रमर तापे गूंजते।।पृथ्वी.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक पुआ बरफी इमरती, लाय जिन सन्मुख धरें।
आत्मैकरस पीयूष मिश्रित, अतुल आनंद भव हरे।।पृथ्वी.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक शिखा उद्योतकारी, जिन चरण में वारना।
अज्ञान तिमिर हटाय अंतर, ज्ञान ज्योती धारना।।पृथ्वी.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध धूप मंगाय स्वाहा[1] नाथ को अर्पण किया।
वसु कर्म स्वाहा हेतु ही, निज आत्म को तर्पण किया।।पृथ्वी.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर आम अनार गन्ना, लाय जिन पूजा करूँ।
वर मोक्ष फल की आश लेकर, कर्म कंटक परिहरूं।।

1. अग्नि।

पृथ्वीमयी दो वृक्ष के, जिनगेह मणिमय मूर्तियां।
जयवंत होवें नित्य ही, चिंतामणी जिनमूर्तियां।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प नेवज, दीप धूप फलादि ले।
जिन कल्पतरु पूजत मनोवांछित सकल फल झट मिलें।।पृथ्वी.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

यमुना सरिता नीर, कंचन झारी में भरा।
जिनपद धारा देत, शांति करो सब लोक में।।10।।

शांतये शांतिधारा।

कमल वकुल अरविंद, सुरभित फूलों को चुने।
जिनपद पंकज अर्प्य, यश सौरभ चहुंदिश भ्रमे।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।।

–अथ प्रत्येक अर्घ्य–सोरठा–

अचलमेरु ईशान, वृक्ष आंवले सम कहा।
नैऋत शाल्मलि जान, जिनगृह पूजूँ पुष्प ले।।1।।

इति श्रीअचलमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थाने मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–हरिगीतिका–

इस धातकी तरु उत्तरी, शाखा विषे जिनगृह महा।
देवाधिदेव जिनेन्द्र की, प्रतिमा रतनमयि हैं वहां।।
सुरभित पवन प्रेरित जिनालय, मणि ध्वजा नित फरहरें।
वर अर्घ्य लेकर पूजते ही, कर्म शत्रू थर हरें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरोरीशानकोणे धातकीवृक्षजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस धातकी तरु के कहे, परिवारतरु दो लाख भी।
अस्सी सहस दो शतक अड़तीस, सर्व में सुर रहें भी।।
सब देवगृह में जिनभवन, जिनमूर्तियाँ शाश्वत कहीं।
हम पूजते हैं भक्ति से, इस भक्ति से शिवपंथ ही।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिधातकीवृक्षस्य द्विलक्षाशीतिसहस्रद्विशतएकोनत्रिंशत्परिवारवृक्षजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तरु शाल्मली की दक्षिणी, शाखा उपरि जिन धाम है।
मृत्युंजयी जिनदेव की, प्रतिमा वहां अभिराम है।।
सुरभित पवन प्रेरित करें, जिनगृह ध्वजा नित फरहरें।
वर अर्घ्य लेकर पूजते ही, कर्म शत्रू थरहरें।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरोर्नैऋत्यकोणे शाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम सुधातकिखंड में शुभ, शाल्मलीतरू अति दिपे।
परिवार तरु दो लाख अस्सी, सहस दो सौ अड़तिसे।।
इनमें सभी में देवगृह में, श्री जिनालय मूर्तियां।
हम पूजते हैं अर्घ्य लेके, प्राप्त होंगी सिद्धियां।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिशाल्मलीवृक्षस्य द्विलक्षाशीतिसहस्रद्विशत-एकोनत्रिंशत्परिवारवृक्षजिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

अचलमेरु के द्वय तरू, धातकि शाल्मलि जान।
दोनों के जिनगेह को, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयस्थसर्व-जिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वयतरु के परिवार तरू, सबमें जिनवर धाम।
देवभवन पण लाख अरु, साठ हजार प्रमाण।।

चार शतक अट्ठत्तरे, सबमें जिनवर बिंब।
जिनगृह जिनप्रतिमा जजूँ, पाऊँ सौख्य अनिंद्य।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलीपरिवारवृक्षस्थितजिनालय-स्थसर्वजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं अकृत्रिमजंबूवृक्षादिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।**

जयमाला

जय जय अकृत्रिम जिनभवन, अघहरण जग चूड़ामणी।
जय जय अकृत्रिम जिनप्रतिम, सब मूर्तियां चिन्तामणी।।
जय जय अनादि अनन्त अनुपम, त्रिभुवनैक शिखामणी।
जय मोह अहि के विष प्रहारण, नाथ! तुम गारुत्मणी[1]।।1।।
सुरगिरि अचल उत्तर दिशी, उत्तर कुरू है भोगभू।
तहँ धातकी तरु थल वृहत् , पे वेदिका अरु पीठ जू।।
राजत उतुङ्ग महा मनोहर, मणिमयी ये तरु हरे।
उनपे अकृत्रिम जिनसदन, मेरे सकल कलिमल हरें।।2।।
तरु चार दिश की चार शाखा, मुख्य हैं उन एक में।
जिनगृह अकृत्रिम शोभता, सुरगृह बने हैं तीन में।।
इनमें सदा व्यंतर रहें, सम्यक्त्व रत्नों युत भने।
परिवार तरु अगणित कहे, परिवार सुर उनपे घने।।3।।
फल मणिमयी है आंवले-सम पत्तियाँ मरकतमणी।
कोंपल पदममणि के बने, बहु फूल नाना वर्णनी।।
सब देवगृह में भी सदा, जिनधाम अनुपम राजते।
उनकी करें जो वन्दना, सब पाप क्षण में नाशते।।4।।
जिनराज सिंहासन रतन-मणियों जड़ित अति सोहना।
त्रय छत्र में मोती लटकते, शशिकिरण सम मोहना।।
चौंसठ युगल सुर हाथ में, चामर लिये हैं भाव से।
वर आठ मंगल द्रव्य सब, जिनराज सन्निध भासते।।5।।

1. सर्प के विष को दूर करने वाली गरुड़मणी।

बहु देव देवी अप्सरायें, इन्द्र गण भी आवते।
जिनवन्दना गुणगान पूजत, करत शीश नवावते।।
संगीत बाजें विविध बजते किंकणी घंटा घने।
वीणा बजाते नृत्य करते, ताल दे देकर घने।।6।।
खेचर युगलिया भक्ति से, जिनवंदना करते वहां।
नर नारियां भूचर सदा, विद्या के बल फिरते वहां।।
आकाशगामी ऋद्धि से ऋषिगण वहां विचरण करें।
जिनवंदना से बहु जनम के पाप तत्क्षण परिहरें।7।।
गणधर सुव्रतधर चक्रधर, हलधर गदाधर सर्वदा।
श्रुतधर अशनिधर कुलधरा, जिन भक्ति करते शर्मदा।।
अध्यात्म योगी वीतरागी, शुद्ध आतम ध्यावते।
वर निर्विकल्प समाधिरत, हो परम आनन्द पावते।।8।।
मैं भक्ति श्रद्धा भाव से, हे नाथ! तुम शरणा लिया।
बस मृत्यु मल्ल पछाड़ने को, तुम निकट धरना दिया।।
हे भक्त वत्सल ! दीनबन्धु! कृपा मुझ पर कीजिये।
हे नाथ! अब तो मुझे, केवल 'ज्ञानमति' श्री दीजिये।।9।।

–दोहा–

शाश्वत श्री जिनगेह के, स्वयं सिद्ध जिनबिंब।
मन वच तन से पूजहूँ, झड़े कर्म कटु निंब।।10।।

ॐ ह्रीं श्री अचलमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ-जिनबिंबेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–नरेन्द्र छंद–

जो अकृत्रिम वृक्षजिनालय, पूजा करते रुचि से।
अकृत्रिम जिनगृह जिनप्रतिमा, वंदन करते मुद से।।
वे अकृत्रिम शाश्वत अनुपम, शिवसुख प्राप्त करेंगे।
केवल 'ज्ञानमती' लक्ष्मी सह, गुण आनन्त्य भरेंगे।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.–5

मन्दरमेरु संबंधि पुष्करतरु शाल्मलितरु जिनालय पूजा

–अथ स्थापना–नरेन्द्र छंद–

पुष्करतरु से अंकित पुष्कर, द्वीप जु सार्थक नामा।
सुरगिरि के दक्षिण-उत्तर में, भोग भूमि अभिरामा।।
उत्तरकुरु ईशान कोण में, पद्मवृक्ष मन मोहे।
देवकुरु नैऋत में शाल्मलि, तरु पे सुरगण सोहें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बसमूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्

अथाष्टकं–लक्ष्मीधरा छंद–(नाथ तेरे कभी होते...)

तीर्थवारी महास्वच्छ झारी भरी।
तीर्थकर्तार के पाद धारा करी।।
दो तरू शाख पे दोय जिन मंदिरा।
पूजते जो उन्हें लेय शिव इंदिरा[1]।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णद्रव के सदृश कुंकुमादी लिये।
राग की दाह को मेटने पूजिये।।दो तरु.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. लक्ष्मी।

सोम[1] रश्मी सदृश श्वेत अक्षत लिये।
आत्मनिधि पावने पुंज रचना किये।।दो तरु.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्द मंदार मल्ली सुमन ले लिये।
मारहर[2] नाथ पादाब्ज में अर्पिये।।दो तरु.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यःपुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गूझिया औ तिकोने भरे थाल में।
भूख व्याधी हरो नाथ पूजूँ तुम्हें।।दो तरु.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रज्वलित दीप लेके करुं आरती।
चित्त में हो प्रगट ज्ञान की भारती।।दो तरु.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशगंध ले अग्नि में खेवते।
मोह शत्रू जले आप पद सेवते।।दो तरु.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम नींबू नरंगी सु अंगूर हैं।
पूज लें आत्म पीयूष को पूर हैं।। दो तरु.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यःफलं निर्वपामीति स्वाहा।

1. चन्द्रकिरण। 2. कामहर।

नीर गंधादि ले स्वर्ण थाली भरुँ।
नाथ पद पूजते सर्वसिद्धी वरूं।।
दो तरू शाख पे दोय जिन मंदिरा।
पूजते जो उन्हें लेय शिव इंदिरा।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

यमुना सरिता नीर, कंचन झारी में भरा।
जिनपद धारा देत, शांति करो सब लोक में।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल कमल अरविंद, सुरभित फूलों को चुने।
जिनपद पंकज अर्प्य, यश सौरभ चहुँ दिश भ्रमें।।11।

दिव्य पुष्पांजलिः।

–अथ प्रत्येक अर्घ्य–सोरठा–

पृथ्वीकायिक वृक्ष, सर्वरत्नमय सोहने।
ताके श्रीजिन सद्म, मनवचतन से पूजहूँ।।1।।

इति श्रीमंदरमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थाने मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–नरेन्द्र छंद–

मंदरमेरु से इशान में, पद्मवृक्ष[1] रत्नों का।
उसकी उत्तर शाखा पे है, जिनमंदिर भव नौका।।
जलगंधादिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज रचाऊँ।
परमअतीन्द्रिय ज्ञान सौख्यमय, अविचल पद को पाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिईशानकोणे पुष्करवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. जम्बूद्वीपपण्णत्ति पृ. 192 पर पुष्करवृक्ष को पद्मवृक्ष कहा है। यथा-दीण्हं वरपउरुक्खाणं।

पुष्कर तरु परिवार वृक्ष हैं, रत्नमयी अतिसुंदर।
पांच लाख अरु साठ सहस, चउशत उन्यासी मनहर।।
सबमें देवभवन में जिनगृह, जिनप्रतिमा शाश्वत हैं।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं नित पूजूं, पाऊं स्वात्मामृत मैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिपुष्करवृक्षस्य पंचलक्षषष्टिसहस्रचतुःशत-एकोनाशीतिपरिवारवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरगिरि के नैऋत्य कोण में, शाल्मली तरु जानो।
उसकी दक्षिण शाखा पर, जिनगेह अकृत्रिम मानो।।
जलगंधादिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज रचाऊँ।
परमअतीन्द्रिय ज्ञान सौख्यमय, अविचल पद को पाऊँ।।।।3।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिनैऋत्यकोणेशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शाल्मलि तरु परिवार वृक्ष भी, शाश्वत रत्नमयी हैं।
पांच लाख अरु साठ सहस, चउ सौ उन्यासी ही हैं।।
सबमें देवभवन उन सबमें, जिनगृह जिनप्रतिमायें।
हम पूजें नित अर्घ्य चढ़ाकर, शाश्वत सुख पा जायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिशाल्मलीवृक्षस्य पंचलक्षषष्टिसहस्रचतुःशत-एकोनाशीतिपरिवारवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य-दोहा-

पुष्कर शाल्मलि वृक्ष के, अमित[1] वृक्ष परिवार।
तिन सबके जिन गेह को, पूजूँ भवदधि तार।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्कर शाल्मलि वृक्ष के, शाश्वत तरु परिवार।
ग्यारह लाख प्रमाण अरु माने बीस हजार।।1।।

1. अगणित।

नव सौ अट्ठावन प्रमित, सबमें सुरगृह मान्य।
जिनगृह जिनप्रतिमा जजूं, शत शत करूं प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिपरिवारवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं अकृत्रिमजंबूवृक्षादिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।**

जयमाला

-सारेठा-

स्वयंसिद्ध जिनराज, अकृत्रिम जिनगेह में।
पूर्ण करो मम आश, गाऊँ अब जयमालिका।।1।।

तोटक छंद (चाल-जय केवल भानु....)

जय पुष्कर वृक्ष महाफलदं, जय शाल्मलि वृक्ष महासुखदं।
जय वृक्ष तने जिनमंदिर को, जय सिद्धिवधू प्रियजिनवर को।।2।।

तरु में मरकत मणि नीलम के, कर्केतन स्वर्णमयी पत्ते।
बहुवर्ण रतन मय अंकुर हैं, रतनों के फल औ पुष्प कहें।।3।।

तरु सिद्ध अनादि अनंत कहें, तहं चामर किंकणि आदि रहें।
अति तुंग सघन द्रुम शोभ रहें, शुभ वायु चले हिलते तरु हैं।।4।।

इन शाख विषे जिनमंदिर जी, महिमा वरणंत पुरंदर[1] जी।
सुर इंद्र नरेंद्र फणीन्द्र सदा, गुण गावत भक्ति भरे सु मुदा।।5।।

जिननाथ! त्रिलोक पिता तुम हो, तुमही भववारिधि तारक हो।
बिन कारण बंधु तुम्हीं प्रभु हो, तिहुंलोक तने तुमही गुरु हो।।6।।

तुम शंकर विष्णु विधी तुमही, तुम बुद्ध हितंकर ब्रह्म तुम्हीं।
भुवनैक शिरोमणि देव तुम्हीं, शरणागत रक्षक देव तुम्हीं।।7।।

1. इन्द्र।

तुम ज्योति चिदंबर मुक्तिपती, तुम पूर्ण दिगंबर विश्वपती।
सरवारथ सिद्धि विधायक हो, समता परमामृत दायक हो।।8।।
तुम भक्त मनोरथ पूर्ण करें, क्षण में निज संपति पूर्ण भरें।
यमराज महाभट चूर्ण करें, वर 'ज्ञानमती' सुख तूर्ण[1] वरें।।9।।

–घत्ता–

तुम जिनवर भास्कर, कर्म भरम हर, शिव संपति कर शरण लही।
जो तुम गुणमाला, पढ़े रसाला, सो पावहिं शिव सौख्य मही।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

–नरेन्द्र छंद–

जो अकृत्रिम वृक्षजिनालय, पूजा करते रुचि से।
अकृत्रिम जिनगृह जिनप्रतिमा, वंदन करते मुद से।।
वे अकृत्रिम शाश्वत अनुपम, शिवसुख प्राप्त करेंगे।
केवल 'ज्ञानमती' लक्ष्मी सह, गुण आनन्त्य भरेंगे।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

1.शीघ्र।

पूजा नं.–6

विद्युन्माली मेरु संबंधि पुष्करतरु शाल्मलिवृक्ष जिनालय पूजा

–अथ स्थापना–नरेन्द्र छंद–

(चाल–इह विधि राज्य करे.....)

पश्चिम पुष्कर अर्ध द्वीप में, मध्य कनक गिरि सोहे।
ताके दक्षिण उत्तर दिश में, भोगधरा[1] मन मोहें।।
उत्तर कुरु ईशान कोण में, पुष्करवृक्ष सुहावे।
दक्षिण देवकुरु नैऋत दिश, शाल्मलि तरु मन भावे।।1।।

–दोहा–

दोनों तरु की शाख पर, भूकायिक[2] जिनगेह।
जिन मूर्ती की थापना, करुँ भक्ति भर नेह।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरोः ईशाननैऋत्यकोणसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्ष-स्थितजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरोः ईशाननैऋत्यकोणसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्ष-स्थितजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह!अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरोः ईशाननैऋत्यकोणसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्ष-स्थितजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्

–अथाष्टकं–रोला छन्द–(चाल–मेरी भावना.....)

पद्माकर को जल अतिशीतल, पद्म पराग सुवास मिला।
रागभाव मल धोवन कारण, धार करूँ मन कंज[3] खिला।।
पृथ्वीकायिक तरु शाखा पे, जिनमंदिर जग पूज्य कहें।
जो जन पूजें भक्ति भाव से, वे पद त्रिभुवन पूज्य लहें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

1. भोगभूमि। 2. पृथ्वीकायिक। 3. कमल।

केशर घिस कर्पूर मिलाया, भ्रमर पंक्तियाँ आन पड़े।
जिनपद पूजन से नश जाते, कर्म शत्रु भी बड़े-बड़े।।पृथ्वी.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्र चंद्रिका सम सित तंदुल, पूंज चढ़ाऊँ भक्ति भरे।
अमृत कण सम निज समकित गुण, पाऊँ अतिशय शुद्ध खरे।।पृथ्वी.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष के सुमन सुगंधित, पारिजात वकुलादि खिले।
कामवाण विजयी जिनवल्लभ, चरण जजत नवलब्धि[1] मिले।।पृथ्वी.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसगुल्ला रसपूर्ण अंदरसा, कलाकंद पयसार[2] लिये।
अमृतपिंड सदृश नेवज से, जिनपद पंकज पूज किये।।पृथ्वी.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हेमपात्र में घृत भर बत्ती, ज्योति जले तम नाश करे।
दीपक से करते जिन पूजन, हृदय पटल की भ्रांति हरे।।पृथ्वी.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि पात्र में धूप जलाकर अष्ट कर्म को दग्ध करें।
निज आतम के भावकर्म मल, द्रव्य कर्म भी भस्म करें।।पृथ्वी.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल अंगूर, अनंनासादिक, सरस मधुर ले थाल भरे।
नव क्षायिक लब्धी फल इच्छुक, पूजूं तुम पादाब्ज[3] खरे।।

1. क्षायिक दर्शन आदि नव क्षायिक भाव। 2. मलाई। 3. चरणकमल।

पृथ्वीकायिक तरु शाखा पे, जिनमंदिर जग पूज्य कहें।
जो जन पूजें भक्ति भाव से, वे पद त्रिभुवन पूज्य लहें।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत माला चरु, दीप धूप फल अर्घ्य लिया।
त्रिभुवन पूजित पद के हेतू, तुम पदवारिज[1] अर्घ्य किया।।पृथ्वी.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

यमुना सरिता नीर, कंचन झारी में भरा।
जिनपद धारा देत, शांति करो सब लोक में।।10।।

शांतये शांतिधारा।।

वकुल मालती फूल, सुरभित निजकर से चुनें।
जिनपद पंकज अर्प्य, यश सौरभ चहुंदिश भ्रमें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

–अथ प्रत्येक अर्घ्य–सोरठा–

मुक्तिवधू भरतार, श्रीजिनवर के बिम्ब हैं।
पूजूं शिव करतार, पुष्पांजली चढ़ाय के।।1।।

इति श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिद्वयवृक्षस्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–रोला छंद–

पश्चिम पुष्कर द्वीप, सुरगिरि के ईशाने।
पदम वृक्ष की शाख, उत्तर दिश परधाने।।
तापे श्रीजिनगेह नाना रत्नमयी है।
मृत्युंजयि जिन बिंब, पूजूँ सौख्य मही है।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. चरणकमल।

पुष्करतरु परिवार, पणलख साठ सहस हैं।
चार शतक उन्यासि, सबमें देवभवन हैं।।
सबमें जिनगृह नित्य, उन सबमें जिनप्रतिमा।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, पाऊं सौख्य अनुपमा।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करवृक्षस्य पंचलक्षषष्टिसहस्रचतुःशत-एकोनाशीतिपरिवारवृक्षस्थितजिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कनकाचल नैऋत्य शाल्मलि द्रुम मन भावे।
दक्षिण शाखा उपरि, जिनवर भवन सुहावे।।
उनके श्री जिनबिम्ब, अकृत्रिम अविकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, पाऊँ शिवतिय प्यारी।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शाल्मलि तरु परिवार, पुष्कर तरु सम माने।
पांच लाख अरु साठ, सहस चार सौ जाने।।
उन्यासी सब वृक्ष, सबमें देवभवन हैं।
सबमें जिनगृह नित्य, जिनवर बिंब जजूँ मैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिशाल्मलीवृक्षस्य पंचलक्षषष्टिसहस्रचतुःशत-एकोनाशीतिपरिवारवृक्षस्थितजिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य-रोला छंद-

इन तरु के परिवार, अगणित शास्त्र बखाने।
उन सब में सुरवृंद, वैभव संयुत मानें।।
प्रतिदेवन[1] गृह माहिं, जिनगृह शाश्वत जानों।
पूरण अर्घ्य बनाय, पूजत ही शिव थानो।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिसपरिवारपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिना-लयस्थजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन द्वय तरु परिवार, वृक्ष सुग्यारस लक्षा।
बीस सहस नवशतक अट्ठावन तरु नित्या।।

1. प्रत्येक देवों के।

सबमें जिनगृह नित्य, जिनप्रतिमा रत्नों की।
पूरण अर्घ्य चढ़ाय, जजत मिले निज सुख भी।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिपरिवारवृक्षस्थितजिना-लयस्थजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-शंभु छंद-

इन ढाई द्वीप के पंचमेरु, संबंधी वृक्ष अकृत्रिम हैं।
छत्तीस लाख अरु सहस तेतालिस, एक सौ बीस प्रमाण कहे हैं।।
दश जिनमंदिर अकृत्रिम, सबमें देवभवन शाश्वत हैं।
सबमें जिनगृह जिनप्रतिमायें, सौ सौ बार नमन नितप्रति हैं।।

-दोहा-

मध्यलोक के दश तरू, के शाश्वत जिनधाम।
व्यंतर सुर के शेष तरु, गृह में जिनगृह मान।।3।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिजंबूशाल्मलिधातकीशाल्मलि-पुष्करशाल्मलि-दशवृक्षतत्परिवारवृक्षषट्त्रिंशल्लक्ष-त्रिचत्वारिंशत्सहस्र-एकशतविंशतिवृक्षस्थित-जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं अकृत्रिमजंबूवृक्षादिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।**

जयमाला

-दोहा-

वीतराग विज्ञान घन, सर्वसार में सार।
वंदूँ श्री जिनदेव को, जिनप्रतिमा अविकार।।1।।

(चाल-हे दीन बन्धु.....)

जय रत्नमयी वृक्ष ये अनादि अनंता।
जय पंचरत्न वर्ण सिद्धकूट धरंता।।
जय जय जिनेन्द्र देव के, जो भवन कहे हैं।
जय जय जिनेन्द्र मूर्तियां, जो पाप दहे हैं।।1।।

जिनमंदिरों में घंटिका औ किंकिणी बजे।
वीणा मृदंग बांसुरी, संगीत हैं सजे।।
मंगल कलश औ धूप घट अनेक धरे हैं।
जो देव देवियों के सदा चित्त हरे हैं।।2।।

रत्नों की स्वर्ण मोतियों की मालिकायें हैं।
कौशेय[1] वस्त्र सदृश रत्न की ध्वजायें हैं।।
उनमें बने हैं सिंह, हस्ति हंस बैल जो।
मयूर, चक्र, गरुड़, चन्द्र, सूर्य कमल जो।।3।।

इन दश प्रकार चिन्ह से चिन्हित हैं ध्वजायें।
जो भक्त गणों को सदा ही पास बुलायें।।
ये रत्नमयी होय के भी वायु से हिलें।
अद्भुत असंख्य रत्न हैं इस रूप में मिलें।।4।।

प्रत्येक जैनगेह में रचना अनंत है।
प्रत्येक में ही इक सौ आठ जैनबिंब हैं।।
प्रत्येक में तोरण दुवार[2] रत्न के बने।
जिनदेव मानतंभ[3] वहां मान को हनें।।5।।

ये जैनभवन हैं सदा सन्मार्ग के दाता।
निज आश्रितों को सत्य में हैं मुक्ति प्रदाता।।
इन नाम के जपे से नशे भूत की बाधा।
व्यंतर पिशाच प्रेत क्रूर, गृहों की बाधा।।6।।

इनके करे जो दर्श वे भवसिंधु तरे हैं।
जो भक्ति से पूजन करें वे सौख्य भरे हैं।।
इस लोक में धन धान्य पुत्र पौत्र को पाते।
चक्रेश की सी संपदा पा मौज उड़ाते।।7।।

जिनधर्म में अतिगाढ़ प्रेम धारते सदा।
परलोक में इन्द्रादि विभव पावते मुदा।।

1. रेशमी। 2. द्वार। 3. मानस्तंभ

पश्चात् यहां तीर्थ की पदवी को धरा के।
तीर्थंकरों का धर्मचक्र जग में चलाके।।8।।

आर्हन्त्य विभव पाय के भगवंत बनेंगे।
वे मुक्ति वल्लभा के भी तो कंत बनेंगे।।
इस विध से नाथ आपकी कीर्ती को मैं सुनी।
अतएव शरण आपकी ली सुन के तुम धुनी।।9।।

बस एक आश आज मेरी पूरिये प्रभो।
मोहादि कर्म वैरियों को चूरिये प्रभो।।
बस मैं स्वयं निज आत्मा को शुद्ध करूंगा।
सम्यक्त्व शुद्ध 'ज्ञानमती' सिद्धि वरूँगा।।10।।

–दोहा–

प्रभु तुम महिमा अगम है, तुम गुणरत्न अनंत।
इक गुण लव भी पाय मैं, तरुँ भवाब्धि अनंत।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालय-स्थजिनबिम्बेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–नरेन्द्र छंद–

जो अकृत्रिम वृक्षजिनालय, पूजा करते रुचि से।
अकृत्रिम जिनगृह जिनप्रतिमा, वंदन करते मुद से।।
वे अकृत्रिम शाश्वत अनुपम, शिवसुख प्राप्त करेंगे।
केवल 'ज्ञानमती' लक्ष्मी सह, गुण आनन्त्य भरेंगे।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

बड़ी जयमाला

–सोरठा–

अकृत्रिम जिनधाम, अतुलविभव को कह सके।
प्रणमूँ आठों याम, गुणमणिमाला कंठ धर।।1।।

–चाल-हे दीनबंधु.....–

जय जयतु जंबूवृक्ष के शाश्वत जिनालया।
जय जयतु शाल्मलीतरु के जैन आलया।।
जय जयतु धातकी तरू के जैनधाम दो।
जय जयतु शाल्मली तरू के जैनधाम दो।।2।।

जय जयतु जय पुष्कर तरू के दो जिनालया।
जय जयतु शाल्मली तरू के दो जिनालया।।
जय जयतु दशों वृक्ष के जिनधाम अनादी।
जय जयतु जैनमूर्तियां मणिरत्नमयादी।।3।।

इन दस के परिवार तरू के जैनगृह नमूं।
इनके सभी व्यंतरगृहों के जैनगृह नमूँ।।
जय जय अनादि अरु अनंत जैन मूर्तियां।
मैं नित्य नमूं भक्ति से ये रत्न मूर्तियां।।4।।

हे चित्स्वरूप जैनबिंब! मैं तुम्हें नमूँ।
हे आदि अंत शून्य! प्रकृतिरूप में नमूँ।।
तुम हो अनादि परमब्रह्म ज्योतिस्वरूपी।
चैतन्य चिदानंद सहज रूप अरूपी।।5।।

हो शुद्ध बुद्ध परम विश्वनाथ महेशा।
आनन्द कंद श्रीजिनंद नमत सुरेशा।।
खेचर सुरों की टोलियाँ आ भक्ति भाव से।
हे नाथ! तुम्हें पूजती है नित्य चाव से।।6।।

हो ऋद्धि सहित साधुवृंद या हो खगेशा।
विद्याधरों के कुल में जन्म लेके नरेशा।।
या भूमिगोचरी मनुष्य गगन में चलें।
विद्या के बल से ढाई द्वीप में अधर चलें।।7।।

जो भव्य वृक्ष मंदिरों की वन्दना करें।
संचित अनंत पाप कर्म खण्डना करें।।
साधु भी समयसाररूप निज को करें हैं।
संसार विषम वार्धि से भी शीघ्र तिरे हैं।8।।

जिनबिंब एक सौ सुआठ सर्व भवन में।
वे रत्न मणिमयी अनादि जैन भवन में।।
रत्नों के सिंहविष्टरों[1] पे राजते सदा।
पद्मासनों से पूर्ण अचल भासते सदा।।9।।

है वीतराग सौम्य छवि चित्त मोहनी।
नासाग्र दृष्टि ध्यान मग्न शांत सोहनी।।
मणि मोतियों के छत्र फिरे ढुर रहे चंवर।
नित भक्ति करे आन वहां अप्सरा अमर।।10।।

संसार विपिन के लिये पावक प्रचंड हो।
हे नाथ! भव समुद्र हेतु तुम तुरंड हो।।
चैतन्य सुधाकर के लिये चंद्रमा तुम्हीं।
मोहाधंकार नाश हेतु अर्यमा[2] तुम्ही।।11।।

मैंने भी मनुज योनि में ही जन्म लिया है।
सम्यक्त्व रत्न पाय जनम धन्य किया है।।
हे नाथ! निधी गिर न जाय भवसमुद्र में।
करके कृपा रक्षा करो चिंता न हो हमें।।12।।

त्रैलोक्य नाथ! आज तेरी शरण में आया।
करुणा करो हे देव! मैं मोहारि सताया।।

1. सिंहासन। 2. सूर्य।

अब दीन बंधु! शीघ्र ही सहाय कीजिये।
बस आपके ही पास में बुलाय लीजिये।।13।।

–दोहा–

जय जय प्रभु त्रैलोक्यपति, आश्रित के प्रतिपाल।
'ज्ञानमती' निज संपदा, देकर करो खुशाल।।14।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिजंबूवृक्षादिदशवृक्षजिनालयतत्परिवारजिनालय-जिनबिंबेभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–नरेन्द्र छंद–

जो अकृत्रिम वृक्षजिनालय, पूजा करते रुचि से।
अकृत्रिम जिनगृह जिनप्रतिमा, वंदन करते मुद से।।
वे अकृत्रिम शाश्वत अनुपम, शिवसुख प्राप्त करेंगे।
केवल 'ज्ञानमती' लक्ष्मी सह, गुण आनन्त्य भरेंगे।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

–शंभु छंद–

श्री शांतिनाथ श्री कुंथुनाथ, अरनाथ प्रभू जन्में यहां पर।
यह हस्तिनागपुर तीर्थ वंद्य, रत्नों की वृष्टि हुई यहाँ पर।।
यहां तेरहद्वीप बना सुंदर, जिनमंदिर हैं महिमाशाली।
मेरा यहाँ संघ सहित निवास, स्वाध्याय ध्यान से है हितप्रद।।1।।

अकृत्रिम वृक्ष जिनालय का, यह विधान अतिशायी सुखप्रद।
सुखशांति समद्धी देकर के, अतिशय शक्ती देगा संतत।।
वीराब्द पचीस सौ उनतालिस, शुभ ज्येष्ठ कृष्ण दशमी तिथि में।
यह विधान रचना पूर्ण किया, होवे मंगलकर सब जग में।।2।।

श्रीमत् चारित्र चक्रवर्ती, आचार्य शांतिसागर गुरुवर।
बीसवीं सदी के प्रथम सूरि, इन पट्टाचार्य वीरसागर।।
ये दीक्षा गुरुवर मेरे हैं, मुझ नाम रखा था 'ज्ञानमती'।
इनके प्रसाद से ग्रंथों की, रचना कर हुई अन्वर्थमती।।3।।

शाश्वत तरु के जिनभवनों की, जिनप्रतिमा की पूजा सुंदर।
निश्चित ऐसा दिन आवेगा, साक्षात् दर्श होगा सुखकर।।
जब तक जग में शाश्वत मंदिर, प्रतिमाओं की भक्ती होवे।
तब तक मुझ गणिनी 'ज्ञानमती'-कृत पूजा सुकृतफल देवे।।4।।

–दोहा–

शाश्वत जिनगृह वंदना, शाश्वत सुख दातार।
भविजन नित वंदन करो, पावो सौख्य अपार।।5।।

।।इति अकृत्रिमवृक्षजिनालयविधानं संपूर्णम्।।
।।जैनं जयतु शासनम्।।

अकृत्रिम वृक्ष जिनालय विधान की मंगल आरती

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

ॐ जय सिद्धायतनं, स्वामी जय सिद्धायतनं।
अकृत्रिम वृक्षों पर राजें, जिनमंदिर अनुपम।।

ॐ जय.।

तीनलोक के मध्यलोक में, द्वीप असंख्य कहे। स्वामी द्वीप.....
उनमें ढाईद्वीपों में ही, मानव रहते हैं।।

ॐ जय.।।1।।

उनकी अकृत्रिम रचना में, हैं दशवृक्ष बने। स्वामी हैं.....
जम्बू-शाल्मलि आदिक, में जिनमंदिर हैं।।

ॐ जय.।।2।।

यह अकृत्रिम वृक्ष जिनालय, का विधान सुन्दर।।स्वामी है विधान....
गणिनी ज्ञानमती माताजी, की यह कृति मनहर।।

ॐ जय.।।3।।

शाश्वत तरु के जिनभवनों की, जिनप्रतिमा प्यारी। स्वामी जिनप्रतिमा.....
करो ''चन्दनामति'' प्रभु आरति, भविजन सुखकारी।।

ॐ जय.।।4।।

जम्बूद्वीप तीर्थ वंदना

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

–शंभु छंद –

तीर्थक्षेत्र हस्तिनापुरी का, कण-कण सचमुच पावन है।
तीन-तीन तीर्थंकर के, कल्याणक से मनभावन है।।
प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव ने, जहाँ प्रथम आहार लिया।
मुनियों की आहारविधी, बतला शिवपथ साकार किया।।1।।

उस पावन तीरथ को मेरा, वंदन है अभिनंदन है।
तीर्थधाम हस्तिनापुरी का, इतिहासों में वर्णन है।।
कौरव-पाण्डव के निमित्त से, हुआ महाभारत भी यहीं।
न्याय हुआ विजयी एवं, अन्याय पराजित हुआ यहीं।।2।।

युगों-युगों के इतिहासों से, बनी ऐतिहासिक नगरी।
महावीर युग में प्रसिद्ध, हो गई आज हस्तिनापुरी।।
वीरप्रभू का पच्चिस सौवां, निर्वाणोत्सव जब आया।
इस तीरथ ने गणिनी माता, ज्ञानमती जी को पाया।।3।।

एक अचेतन तीरथ पर, चैतन्य तीर्थ जब उदित हुआ।
शांती-कुंथू-अरनाथ प्रभू का, चमत्कार तब प्रगट हुआ।।
चार-चार कल्याणक उनके, इसी भूमि पर हुए कभी।
तीर्थंकर चक्री-कामदेव, पदधारक त्रयतीर्थंकर ही।।4।।

यही पुण्य परमाणु ज्ञानमति माता ने स्पर्श किये।
तभी तीर्थ पर जम्बूद्वीप, बनाने के शुभ भाव हुए।।
रचना भी बन गई और, तीरथ का पूर्ण विकास हुआ।
ज्ञानज्योति रथ के निमित्त से, जन-जन को यह ज्ञात हुआ।।5।।

सन् उन्निस सौ पिच्चासी में, लाखों जनता ने देखा।
जम्बूद्वीप की रचना में, भूगोल जैन सबने देखा।
इस धरती पर सदियों के पश्चात् बहारें आई थीं।
शासन और प्रशासन ने भी, मिलकर खुशी मनाई थी।।6।।

धरती पर मानों स्वर्ग देख, सबके हर्षाश्रू छलक पड़े।
पर्वत सुमेरु के ऊपर तक, अभिषेक हेतु जब इन्द्र चढ़े।।
इक सौ इक फुट ऊँचे सुमेरु के, ऊपर भीड़ लगी रहती।
ऊपर से नीचे पूरे जम्बूद्वीप की है रचना दिखती।।7।।

इस रचना में अकृत्रिम जिनवर-मंदिर सभी अठत्तर हैं।
तथा देवभवनों के मिल दो, शतक सात जिन मंदिर हैं।।
इस गोलाकार बनी रचना में, सुन्दर बाग-बगीचे हैं।।
चौदह महानदी और क्षेत्र-पर्वत के दृश्य अनोखे हैं।।8।।

हे आयुष्मन भव्यात्माओं! इन जिनभवनों को नमन करो।
इक सौ छत्तिस सीढ़ी चढ़ कर, गिरिवर सुमेरु वंदन कर लो।।
इस जम्बूद्वीप को घेर के चारों, ओर है लवणसमुद्र बना।
उसमें करके नौका विहार, सब प्रतिमा को भी नमन करना।।9।।

पैदल प्रदक्षिणा भी करके, आत्मिक शारीरिक स्वास्थ्य लहो।
प्राकृतिक सुरभि जलवायू से, बिन औषधि के भी स्वस्थ रहो।।
कितने रोगी इस तीरथ के, दर्शन से स्वस्थ हुआ करते।
कितने योगी इस जम्बूद्वीप के, ध्यान में मग्न हुआ करते।।10।।

जब नग्न दिगम्बर मुनिवर इस, मेरू गिरि का वंदन करते।
लगता है सचमुच चारण ऋद्धी-धारी मुनि पर्वत चढ़ते।।
तीर्थंकर के जन्माभिषेक में, चारण ऋषिवर आते हैं।
जिनशास्त्रों में है वर्णन वे, अभिषेक देख हरषाते हैं।।11।।

इसलिए आज भी साधु-सन्त, जन्माभिषेक देखा करते।
अभिषेक वंदना क्रिया आदि से, निज को धन्य किया करते।।
जब पाण्डुक आदि शिलाओं पर, अभिषेक का अवसर प्राप्त करो।
तब खुद तीर्थंकर बनने का, निज शुद्ध हृदय में भाव भरो।।12।।

यह पुण्य आज इस कलियुग में, इसलिए सभी को प्राप्त हुआ।
क्योंकि माता श्री ज्ञानमती के, ज्ञान का शुभ्र प्रकाश हुआ।।
जाने-अनजाने में भी जो इन, प्रतिमाओं को नमन करें।
वे मिष्ट मधुर फल को पाकर, अपनी आत्मा को चमन करें।।13।।

यह जम्बूद्वीप की महिमा मैंने, अतिसंक्षिप्त बताई है।
जिस नाम से ही हस्तिनापुरी ने, नूतन ख्याती पाई है।।
इस रचना के अतिरिक्त तीर्थ, परिसर में मंदिर कई बने।
सबमें भगवान विराजित हैं, जिनभक्त भक्ति से उन्हें नमें।।14।।

इस जम्बूद्वीप के मुख्यद्वार पर, कल्पवृक्ष है बना हुआ।
श्रीणमोकार का महामंत्र भी, इसी द्वार पर लिखा हुआ।।
इस द्वार से अंदर जाकर सारा, परिसर स्वर्ग सदृश लगता।
है इतना स्वच्छ सुरम्य तीर्थ, जहाँ रहने का ही मन करता।।15।।

सुन्दर है श्वेत कमल मंदिर, जहाँ कल्पवृक्ष भगवान खड़े।
मनवांछित फल की प्राप्ति हेतु, वहाँ छत्र चढ़ाते भक्त बड़े।।
पुल से जाकर इस मंदिर में, महावीर प्रभू को नमन करो।
अतिशययुत अवगाहन प्रमाण, प्रतिमा से सब सुख वरण करो।।16।।

इक तीन मूर्ति मंदिर विशाल, इस तीर्थ का मुख्य जिनालय है।
वृषभेश भरत बाहूबलि की, प्रतिमाएँ जहाँ सुखालय हैं।।
आजू-बाजू की वेदी में, तीर्थंकर नेमि व पारस हैं।
इनमें से कालसर्प का योग, विनाश करें प्रभु पारस हैं।।17।।

इन सब जिनवर को वन्दन करके, अन्य मंदिरों में भी चलो।
प्रभु शांतिनाथ अरु वासुपूज्य-मंदिर व ॐ मंदिर को नमो।।
फिर मंदिर एक सहस्रकूट, व बीस तीर्थंकर मंदिर है।
श्री ऋषभदेव मंदिर एवं नवग्रह मंदिर भी सुन्दर है।।18।।

इन सातों मंदिर के हि निकट इक तेरहद्वीप जिनालय है।
जहाँ तेरहद्वीप के चार शतक, अट्ठावन शुभ चैत्यालय हैं।।
ढ़ाई द्वीपों में पाँच मेरु, इक सौ सत्तर हैं समवसरण।
देवों के भवन आदि सबमें, दो सहस्र मूर्तियों को प्रणमन।।19।।

सन् उन्निस सौ पैंसठ में गणिनी ज्ञानमती माताजी ने।
पिण्डस्थ ध्यान करते-करते, यह रचना पाई थी उनने।।

देखा पुनश्च करणानुयोग, ग्रंथों में वह सारी रचना।
वह जम्बूद्वीप व तेरहद्वीप की, बनी तभी अद्भुत रचना।।20।।

इस रचना के दर्शन करके, कीर्तिस्तंभ के प्रभुवर को नमो।
आगे चलकर के तीन लोक की रचना के दर्शन कर लो।।
जहाँ अधो–मध्य अरु ऊर्ध्वलोक के बाद बना सिद्धालय है।
उस सिद्धशिला पर सिद्धों के दर्शन से मिले सुखालय है।।21।।

आगे श्री शांति–कुंथु–अर प्रभु मंदिर में जा प्रभु चरण नमो।
उस मंदिर के पूरब में निर्मित चन्द्रप्रभ मंदिर में चलो।।
इस मंदिर के ही निकट शांति तीर्थंकर प्रभु का समवसरण।
सारी दुनिया में एक मात्र बन रहा अधर नभ में सुंदर।।22।।

इन सबके दर्शन करके चलो तो ध्यान का मंदिर एक यहाँ।
चौबिस तीर्थंकर से संयुत इक ह्रीं की प्रतिमा बनी जहाँ।।
भक्तों को ध्यानलीन होने पर मिलती अनुपम शांति वहाँ।
बाहर से हरितकाय सुंदर है ध्यान का अद्भुत केंद्र कहा।।23।।

इस मंदिर के सम्मुख पश्चिम में, अष्टापद इक मंदिर है।
जहाँ गिरि कैलाश पे राज रहे त्रैकालिक चौबिस जिनवर हैं।।
इन सब मंदिर के साथ मनोरंजन के भी कुछ स्थल हैं।
ऐरावत हाथी पर परिक्रमा करते सब जन सुखप्रद हैं।।24।।

जयशील रहे यह तीर्थ हस्तिनापुर का यश फैले जग में।
जयशील रहे यह जम्बूद्वीप, व मेरु सुदर्शन भी युग में।।
जयशील ज्ञानमति माता हों, जिनकी यह कर्मभूमि सच में।
उनकी शिष्या ''चन्दनामती'' की, अभिलाषा यह प्रभु पद में।।25।।

–दोहा –

तीर्थंकर अरु तीर्थ को, नमन करूँ शत बार।
हो तीरथ की वंदना, जीवन में साकार।।26।।

भजन

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–कभी कुण्डलपुर जाना है.....

प्रभू की पूजन करना है, प्रभू की भक्ति करना है,
निजातम शक्ती भरना है, मुझे मुक्तिश्री वरना है।।
प्रभु भक्ती गंगा में अवगाहन करना है।
सिद्धों के गुण की सबको, मिलकर अर्चा करना है। प्रभू की पूजा.....।। टेक.।।

जनम-जनम के शुभ कर्मों का, फल यह सिद्ध अवस्था।
सिद्धशिला पर शाश्वत राजें, यही अनादि व्यवस्था-यही अनादि व्यवस्था।
उन सिद्धों की प्रतिमा, का वन्दन करना है।
जिनके दर्शन वन्दन से, भवसागर तरना है।।
प्रभू की पूजा करना है, प्रभू की भक्ती करना है,
निजातम शक्ती भरना है, मुझे मुक्तिश्री वरना है.....।।1।।

कितनी सतियों ने प्रभु के, दर्शन से पाप नशाए।
तेरे अतिशय से जलती, अग्नी भी जल बन जाए। अग्नी भी.....
सीता चन्दनबाला का, इतिहास बताता है।
भक्तीरस तो माँ ज्ञानमती की, जीवन गाथा है।।
प्रभू की पूजा करना है, प्रभू की भक्ती करना है,
निजातम शक्ती भरना है, मुझे मुक्तिश्री वरना है.....।।2।।

जिसने सिद्ध प्रभू को, अपने हृदय कमल में ध्याया।
वीतराग परमातम पद में, लीन परम सुख पाया। लीन परम.....
निज ध्यान की धारा में, अवगाहन करना है।
'चंदनामती' पहले तो, प्रभु भक्ती करना है।।
प्रभू की पूजा करना है, प्रभू की भक्ती करना है,
निजातम शक्ती भरना है, मुझे मुक्तिश्री वरना है.....।।3।।